INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 8 | SEPTEMBER – 2025

विद्यार्थियों के जीवन कौशल का नैतिक मूल्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

कृष्ण कुमार पाण्डेय
पीएच. डी. शोधार्थी (शिक्षा विभाग), आईसेक्ट विश्वविद्यालय, हजारीबाग.

डॉ. प्रमोद कुमार नायक
कुलपति, आईसेक्ट विश्वविद्यालय, हजारीबाग (झारखण्ड)

सारांश–

जीवन कौशल हमारे रोजमर्रा के जीवन का एक अभिन्न हिस्सा हैं। इन कौशलों का विकास हमारे व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन दोनों में आवश्यक है। प्रस्तुत शोध में कला एंव विज्ञान वर्ग के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के जीवन कौशल का उनके नैतिक मूल्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रुप में 600 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। ऑकड़ों के संकलन हेतु अंजुम अहमद और सबा परवीन – जीवन कौशल मापनी। और डॉ. सुरभि अग्रवाल द्वारा निर्मित मोरल वैल्यू इन्वेन्टरी। प्रमाणीकृत उपकरण का उपयोग किया गया है। परिकल्पनाओं के प्रकलन के पश्चात् यह पाया गया कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के जीवन कौशल का कला वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य पर कम प्रभाव पड़ता हैं।

प्रस्तावना –

जिस प्रकार एक ओर शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करके उसे तेजस्वी ,बुद्धिमान , चरित्रवान , विद्वान तथा वीर बनाती है , उसी प्रकार दूसरी ओर शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी एक आवश्यक तथा शक्तिशाली साधन है । दूसरे शब्दों में व्यक्ति की भांति समाज की शिक्षा के चमत्कार से लाभान्वित होता है। शिक्षा के द्वारा समाज भावी पीढ़ी के बालकों को उच्च आदर्शों , आशाओं, आकांक्षाओं , विश्वासों तथा परम्पराओं आदि सांस्कृतिक संपत्ति को इस प्रकार हस्तांतरित करता है कि उनके हृदय में देश प्रेम तथा त्याग की भावना प्रज्वलित हो जाती है।

जीवन कौशल वे क्षमताएँ और योग्यताएँ होती हैं जो किसी व्यक्ति को विभिन्न जीवन स्थितियों और चुनौतियों से सफलतापूर्वक निपटने में मदद करती हैं। यह सिर्फ एक व्यक्ति की शैक्षणिक उपलब्धियों या पेशेवर क्षमताओं से संबंधित नहीं है, बल्कि इससे भी आगे जाकर उन क्षमताओं पर केंद्रित होता है जो व्यक्ति को मानसिक, सामाजिक, और भावनात्मक रूप से मजबूत बनाती हैं।

जीवन कौशल हमारे रोजमर्रा के जीवन का एक अभिन्न हिस्सा हैं। इन कौशलों का विकास हमारे व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन दोनों में आवश्यक है। आधुनिक समाज में तेजी से बदलती परिस्थितियों और जटिलताओं का सामना करने के लिए हमें एक निश्चित स्तर के मानसिक और भावनात्मक कौशलों की आवश्यकता होती है। जैसे–जैसे हमारी जिम्मेदारियाँ बढ़ती जाती हैं, वैसे–वैसे हमें बेहतर निर्णय लेने, तनाव को संभालने, और दूसरों के साथ उचित संवाद स्थापित करने की जरूरत होती है।

जीवन कौशल हमें न केवल चुनौतियों से निपटने में सक्षम बनाते हैं, बल्कि यह भी सिखाते हैं कि कैसे जीवन के विभिन्न पक्षों में संतुलन बनाए रखा जा सकता है। जीवन कौशल किसी भी उम्र में सीखे जा सकते हैं और यह प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती। चाहे वह किशोरावस्था हो या वयस्क जीवन, जीवन कौशलों का महत्व हमेशा बना रहता है। जहां, जीवन कौशल का संबंध "क्या करना है और कैसे करना है" से है, वहीं जीवन कौशल शिक्षा इस को यथार्थ रूप प्रदान करके युवाओं को स्वस्थ, प्रसन्नचित्त उत्तरदायी, ईमानदार, आत्मनिभर्र, विचारशील व्यिक्त तथा राष्ट्रीय उपयोगी नागरिक में विकसित करती है। जीवन कौशल के विषय में बेंजामिन फ्रेकलीन का यह कथन बहुत है समीचीन प्रतीत होता है—"मुझे सिखाओ में भूल जाऊंगा, मुझे दिखाओ शायद मुझे याद रहे मुझे शामिल करो और में सीख लूंगा।" जीवन कौशल पेशेवर जीवन में सहकर्मियों के साथ बेहतर संवाद स्थापित करने, तनावपूर्ण परिस्थितियों का सामना करने, और कार्यक्षेत्र में प्रभावी निर्णय लेने में मदद करते हैं। इसके साथ ही, जीवन कौशलों का उपयोग करके व्यक्ति अपने कैरियर में तेजी से प्रगति कर सकता है। यह उसे अपने कार्यस्थल पर एक सम्मानित स्थान प्राप्त करने में मदद करता है और उसे एक अच्छे नेता के रूप में उभरने का मौका देता है।

मूल्य मनुष्य की आंतरिक शक्ति है जो उसे विशिष्ट कार्य करने के लिए प्रेरित करने के साथ ही उसके आचरण को शासित करती है। जिससे व्यक्ति का उत्कर्ष होता है। जब मूल्य की बात शिक्षा व समाज के संदर्भ में की जाती हैं तब वहां मूल्य से आशय उन आदर्शों , मान्यताओं व नैतिकता से होता है जिससे समाज को एक दिशा निर्देश मिलता है। सत्य, अहिंसा, शांति, प्रेम, सौहाद्र, ईमानदारी, सद्व्यवहार, नैतिकता, कल्याणकारिता इत्यादि हमारे सार्वभौमिक व आधारभूत मूल्य हैं। मूल्य का विकास समाज में होता है सामाजिक सम्पर्क के परिणाम स्वरूप मनुष्य का नैतिक विकास होता है। मनुष्य का जीवन नैतिक मूल्यों के बिना अधूरा है। नैतिक मूल्य हमें सही और गलत के बीच अंतर करना सिखाते हैं और हमें समाज में एक जिम्मेदार व्यक्ति बनने के लिए प्रेरित करते हैं। नैतिकता का महत्व न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। यह मूल्य हमें जीवन जीने का सही तरीका और दूसरों के साथ बेहतर संबंध बनाने की कला सिखाते हैं। नैतिक मूल्य वे सिद्धांत होते हैं जो किसी व्यक्ति के आचरण और व्यवहार को सही दिशा में मार्गदर्शित करते हैं। यह वे आदर्श हैं, जो हमें सचाई, ईमानदारी, सहयोग, सहानुभूति, प्रेम और न्याय जैसे गुणों का अनुसरण करने के लिए प्रेरित करते हैं। यह व्यक्ति के जीवन के हर क्षेत्र में एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं।

नैतिक मूल्य व्यक्ति के आचरण तथा व्यवहार को व्यक्त करते हैं। नैतिक मूल्य का संबंध हमारी अभिरूचियों से है, ये व्यक्ति को पवित्र और संस्कारी बनाते हैं। इसमें ईमानदारी, त्याग, निष्ठा, सत्य बोलना, करूणा दया, उत्तरदायित्व की भावना, नम्रता आदि मूल्य आते हैं।

विद्यार्थियों के जीवन कौशल का नैतिक मूल्य पर प्रभाव का अध्ययन के महत्व को देखते हुए शोधार्थी की इनके परस्पर सम्बन्ध एवं परस्पर पड़ने वाले प्रभाव को जानने में रुचि उत्पन्न हुई अतः शोधार्थी द्वारा शोध के विषय का चयन किया गया।

समस्या कथन –

विद्यार्थियों के जीवन कौशल का नैतिक मूल्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

अध्ययन का औचित्य –

अपने घर के अतिरिक्त विद्यालय ही एक मात्र ऐसा स्थान है जहाँ विद्यार्थियों सबसे अधिक समय व्यतीत करता है। वही विद्यार्थियों अपने ज्ञान तथा कौशल का विकास करता है। विद्यार्थियों के जीवन कौशल का नैतिक मूल्य पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। वास्तव में जीवन कौशल बहुत आवश्यक है।

विद्यार्थियों में वे सभी आवश्यक गुण निहित होने चाहिए जिससे विद्यार्थियों के अनुकूल वातावरण पठन—पाठन सम्भव हो सके। शिक्षक अपने आप को उस विद्यालय के दिशा—निर्देशों के अनुकूल ढाल सके तथा अपने पेशे के कार्य को उच्च कोटि तक ले जाने में समर्थ हो सके।

प्रस्तुत पदों की कियात्मक परिभाशा–

1- जीवन कौशल –

अनुकूल व्यवहार को वैचारिक, सामाजिक, व्यावहारिक कौशल संग्रह के रूप में परिभाषित किया है जिनका व्यक्ति को अपने दैनिक जीवन में कार्य करने हेतु आवश्यकता होती है।

2. नैतिक मूल्य –

प्रत्येक व्यक्ति को समाज में रहते हुए समाज के नैतिक संबंधी नियमों का पालन करना होता है । ये नैतिक संबंधी नियम नैतिक मूल्य कहलाते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य –

- कला एवं विज्ञान वर्ग के औसत जीवन कौशल वाले विद्यार्थियों के आत्मविश्वास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ –

स्नातक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के जीवन कौशल और नैतिक मूल्य के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जायेगा।

अनुसंधान प्रविधि

शोध विधि–

किसी भी अनुसंधान में सत्य की प्राप्ति के लिए एक शोध विधि को निश्चित करना होता है। वर्तमान में प्रस्तुत शोध अध्ययन में **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया जाएगा। इसे वर्णानात्मक अनुसंधान के नाम से भी जाना जाता है। वर्णनात्मक अनुसंधान वह प्रक्रिया है जिसके अंर्तगत परिस्थितियों का वर्णन और विश्लेषण किया जाता है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श –

''जनसंख्या का अर्थ इकाईयों के समूह से होता हैं अर्थात इकाईयों के पूर्ण समूह को जिसके लिए चर का मान निकालना अभीष्ट हैं, जनसंख्या कहलाता हैं।'' प्रस्तुत अध्ययन बिलासपुर जिले के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रुप में लिया जायेगा। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने अपने अध्ययन के लिए बिलासपुर जिले के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा। न्यादर्श हेतु शोधार्थी ने ''यादृच्छित न्यादर्श विधि'' (Randam Sampling Method) का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत अध्ययन में स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के जीवन कौशल जागरुकता का आत्मविश्वास एवं नैतिक मूल्य पर प्रभाव के अध्ययन हेतु बिलासपुर जिले का चयन किया गया है। जिसमें कुल न्यादर्श संख्या 600 है, जिसमें 300 कला तथा 300 विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों को चयनित किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

किसी समस्या के अध्ययन हेतु प्रदत्तों प्राप्ति व्याख्या विश्लेषण के लिए उपकरण की आवश्यकता होती है।

उपकरण के नाम :–

प्रस्तुत शोध में आकड़ों के संकलन हेतु निम्नांकित उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा –

1. अंजुम अहमद और सबा परवीन – जीवन कौशल मापनी।
2. डॉ. सुरभि अग्रवाल द्वारा निर्मित मोरल वैल्यू इन्वेंटरी।

अध्ययन के चर :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित चर है –

स्वतंत्र चर – जीवन कौशल।

आश्रित चर – नैतिक मूल्य।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ :–

1. Mean (माध्य)
2. Standard Deviation (मानक विचलन)
3. Standard Error Deviation (मानक त्रुटि विचलन)
4. सह–सहसम्बन्ध परीक्षण

आंकड़ो का विश्लेषण एवं व्याख्या –

सारणी क्र. 1
कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के जीवन कौशल और नैतिक मूल्य के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध की सारणी

विद्यार्थियों का समूह	संख्या	मध्यमान	∑x2,y2and	∑xy	सहसंबंध गुणांक	सार्थकता कोटि	सार्थकता स्तर	परिणाम
जीवन कौशल	600	131	470742	194485	0.48	1198	0.05=0.062	HO-2 परिकल्पना अस्वीकृत हुई
नैतिक मूल्य	600	144	351518				0.01=0.081	

विलेशण एवं व्याख्या :–

उपरोक्त सारणी क्र. 4.2 में स्नातक स्तर के कला और विज्ञान के 600 विद्यार्थियों के जीवन कौशल और 600 विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य के बीच सहसम्बन्ध की गणना किया गया है। उपरोक्त आंकड़ों के आधार पर यह देखा गया है कि जीवन कौशन के विद्यार्थियों का मध्यमान 131 है तथा नैतिक मूल्य के विद्यार्थियों का मध्यमान 144 है। दोनों के बीच संहसंबंध गुणांक r – 0.48 पाया गया, जो df–1198 के साथ तालिका मान से .05 स्तर पर अर्थात् 0.062 और .01 स्तर पर अर्थात् 0.081 दोनों पर अधिक है। अतः 'r' का परिमाण दर्शाता है कि स्नातक स्तर के कला और विज्ञान के विद्यार्थियों के जीवन कौशल और नैतिक मूल्य के बीच एक महत्वपूर्ण उच्च सकारात्मक संबंध है।

अतः परिकल्पना –1 ''स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के जीवन कौशल और नैतिक मूल्य के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जायेगा।'' अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :–

यह पाया गया है कि स्नातक स्तर के कला और विज्ञान के विद्यार्थियों के जीवन कौशल और नैतिक मूल्य के बीच महत्वपूर्ण उच्च सकारात्मक सहसंबंध है।

निष्कर्ष –

जीवन कौशल व्यक्ति के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये कौशल न केवल हमारे पेशेवर जीवन में, बल्कि व्यक्तिगत जीवन में भी आवश्यक होते हैं। जीवन कौशलों का विकास व्यक्ति को मानसिक,

सामाजिक, और भावनात्मक रूप से सशक्त बनाता है। जीवन में चुनौतियों का सामना करने, निर्णय लेने, और संबंधों को बनाए रखने के लिए जीवन कौशलों की आवश्यकता होती है। यह हमें एक सफल और संतुलित जीवन जीने में मदद करता है। जीवन कौशल सीखना और उनका सही उपयोग करना हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है। चाहे वह कोई भी उम्र हो, जीवन कौशलों का महत्व कभी कम नहीं होता। विद्यार्थियों का जीवन कौशल जितना अधिक प्रभावशाली व विद्यार्थियों के अनुकूल होगा, उसका उनके नैतिक मूल्यों का विकास उतना अधिक प्रभावपूर्ण तरीके से होगा। जीवन कौशल विकसित होने की दशा में विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य अत्यन्त उच्च पर होगा। अतः स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के जीवन कौशल का विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा कला वर्ग के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य पर अधिक प्रभाव पड़ता हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. प्रज्ञा, श्रीवास्तव एवं अग्रवाल, देवेन्द्र, 2014, जीवन कौशल, मूल्य और व्यक्तिगत विकास International Journal of Creative Research Thoughts, Volume 2, Issue.10, October 2014, https://www.ijrte.org/wp-content/uploads/papers/v7i6s5/F11940476S519.pdfretrieved on 17/01/2020
2. Goyat, Anju. (2012). A study of Adjustment Level Among Primary School Teachers in Jhajjar District. International Journal of Transformation in Business Management, 1,6. Available on www.ijtbm.com.
3. जैन, किशनचन्द्र, (1976) शैक्षिक संगठन, प्रशासन एवं पर्यवेक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर। www-iosrjournals-org
4. CBSE Teacher*s manual for Life skill Education and CCE of IX&X-cbse-nic-in
5. WH, 1986, The Otavacharter for Health promotion]UN
6. WHO, 1997, Geneva Life Skills Education For Children And Adolescents In Schools] Introduction and Guidelines to Facilitate the Development and Implementation of Life Skills Programmes.
7. WHO,1999, Geneva Partners in Life Skills Education &Conclusions From A United Nations Inter&agency Meeting Department of Mental Health social Change And Mental Health Cluster-
8. नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क–2005 राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली ncert-nic-in
9. Tripathy, A-2016-a beautiful life life skill Education, New Delhi, Global publications www-ibe-unesco-org
10. शर्मा, आर० ए०, (2011) अध्यापक – शिक्षा, एवं प्रशिक्षण तकनीकी आर० लाल० बुक डिपो, मेरठ।
11. शर्मा, आर. ए. (2002) शिक्षा प्रबन्धन–सूर्या पब्लिकेशन मेरठ ।
12. Sharma, T.C. (2005), Teaching Learning Theory and Teacher's Education, Sarup and Sons, ISBN-B: 9788176255707.
13. Singh, R.P. (2011), Teacher Education Today, Shipra Publication, New Delhi, ISBN No: 978817541531.
14. सिंह, अरूण कुमार (2008), शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद ।
15. सुखिया, एस.पी (2006) विद्यालय प्रशासन संगठन एवं विनोद पुस्तक आगरा।

कृष्ण कुमार पाण्डेय
पीएच. डी. शोधार्थी (शिक्षा विभाग), आईसेक्ट विश्वविद्यालय, हजारीबाग.